अध्याय 1

भूमिका (भाग 1)

अय्यूब की पुस्तक की भूमिका (1:1–2:13) गद्य में लिखी गई, जबकि पुस्तक का शेष अधिकतर भाग पद्य (कविता) में लिखा गया है। पहले दो अध्यायों में अय्यूब का परिचय पुरखाओं के संसार के एक विलक्षण व्यक्ति के रूप में हुआ है। वह यहूदी नहीं था। इब्रानी पवित्र शास्त्र में उसका नाम पढ़ना अपने आप में अद्‌भुत है। वह उचित रूप में नेक नाम और असामान्य रूप में धार्मिक व्यक्ति था।

शैतान द्वारा अय्यूब को परखे जाने की बात हमें भूमिका वाले अध्यायों में मिलती है। नाहक पीड़ा का वर्णन बड़े विस्तार से किया गया है। हमें छुटकारे के उस ज्ञान को पीछे भुलाकर जो हमें मसीह के दुःख उठाने के द्वारा मिला है पुस्तक के संदर्भ में आना चाहिए। अय्यूब न केवल ज्ञान से अनभिज्ञ था, बल्कि वह परमेश्वर और शैतान के बीच होने वाली बातचीत से भी पूरी तरह से अनजान था। उसने और उसके मित्रों ने यह मान लिया कि यह कष्ट का सम्बन्ध कार्यकारिणी से जुड़ा हुआ है। यही मान्यता पहली सदी ईसवी तक यहूदियों में थी, जैसा कि यरूशलेम में अंधे व्यक्ति के सम्बन्ध में यीशु के चेलों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्न से पता चलता है: ‘‘हे रब्बी, किसने पाप किया था कि वह अंधा जन्मा, इस मनुष्य ने या इसके माता-पिता ने ?’’ (यूहन्ना 9:2)।

मनुष्यजाति ने अन्यायपूर्ण दुःख उठाए जाने की समस्या पर हमेशा चिंतन किया है। प्राचीन निकट पूर्व के दस्तावेजों में इस समस्या से जूझने का पता चलता है। 21वीं सदी ई.पू. के मिस्र के ‘‘सुवक्ता किसान’’ खुन-अनुप का वर्णन है जिसका सामान बाजार में चोरी हो गया था। न्याय के लिए वह एक से एक अधिकारी के पास विनती करता है, जो अंत में उसे मिल जाता है।[1] ज्ञान की ‘‘ए डायलॉग बिटवीन ए मैन ऐंड हिज़ गॉड’’ (एक आदमी और उसके परमेश्वर के बीच बातचीत) नामक पुस्तक प्राचीन सुमेरी चाहे काफ़ी अपूर्ण है, पर उसमें अन्यायपूर्ण दुःख आने की समस्या पर चर्चा की गई है।[2]

कष्ट पर सबसे प्रसिद्ध गैर बाइबली पुस्तक ‘‘आई विल प्रेज़ द लॉर्ड ऑफ़ विज़्डम’’ है। इसे ‘‘द पोयम ऑफ़ द राइचिस सफ़रर’’ (दुःख उठाने वाले धर्मी की कविता) या ‘‘द बेबिलोनियन अय्यूब’’[3] (बाबुल वाला अय्यूब) भी कहा गया है। इसमें एक ऊंचे रुतबे वाले व्यक्ति पर बीमारी आन पड़ी। उसने अपने जीवन की बदली हुई परिस्थितियों के लिए विलाप किया और सहायता के लिए मरदुक नामक देवता से याचना की। चंगाई मिल जाने पर उसने अपने देवता को धन्यवाद के भजन के साथ समाप्त किया।

कष्ट पर इन गैर बाइबली चिंतनों और अय्यूब की पुस्तक के बीच स्पष्ट अंतर पाए जाते हैं। उन्हें पढ़ने वाले किसी भी व्यक्ति को और हमें अय्यूब की पुस्तक को विस्तार से पढ़कर उसके संदेश की समीक्षा करने पर स्पष्ट पता चलता है।

अय्यूब और उसकी पृष्ठभूमि का विवरण (1:1–5)

[1]ऊज़ देश में अय्यूब नामक एक पुरुष था; वह खरा और सीधा था और परमेश्वर का भय मानता और बुराई से दूर रहता था। [2]उसके सात बेटे और तीन बेटियां उत्पन्न हुईं। [3]उसके सात हज़ार भेड़-बकरियां, तीन हज़ार ऊंट, पांच सौ जोड़ी बैल, और पांच सौ गदहियां, और बहुत से दास-दासियां थीं; वरन् उसके पास इतनी सम्पत्ति थी, कि पूर्वी देशों के लोगों में वह सबसे बड़ा था। [4]उसके बेटे बारी-बारी से एक दूसरे के घर में खाने-पीने को जाया करते थे; और अपनी तीनों बहिनों को अपने संग खाने-पीने के लिये बुलवा भेजते थे। [5]जब जब भोज के दिन पूरे हो जाते, तब तब अय्यूब उन्हें बुलवाकर पवित्र करता, और बड़े भोर को उठकर उनकी गिनती के अनुसार होमबलि चढ़ाता था; क्योंकि अय्यूब सोचता था, ''कदाचित् मेरे लड़कों ने पाप करके परमेश्वर को छोड़ दिया हो।'' इसी रीति अय्यूब सदैव किया करता था।

आयत 1. ऊज़ देश में अय्यूब नामक एक पुरुष था। अधिकतर इब्रानी वाक्यों का आरम्भ कर्त्ता और कर्म के बाद क्रिया के साथ होता है। इस आयत और पुस्तक का आरम्भ ''पुरुष'' (*'ish, इश*) के साथ होता है। रॉबर्ट एच. आल्डन का सवाल था, ''क्या यह पुस्तक का मतलब मुख्य पात्र के मनुष्य होने, के सीमित होने, की कमज़ोरी हो सकता है कि 'पुरुष' पहला शब्द है?''[4] पुस्तक का आरम्भ वास्तविकता की तस्वीर दिखाने के साथ होता है। अय्यूब एक वास्तविक व्यक्ति था जो पृथ्वी पर रहा और वह परमेश्वर की सेवा करता था।

''ऊज़ देश'' का साफ़ कभी पता नहीं है कि कहां है। परम्परा के अनुसार यह पलिश्तीन के पूर्व या उत्तर पूर्व में कहीं पर था।

वह खरा और सीधा था और परमेश्वर का भय मानता और बुराई से दूर रहता था। अय्यूब के लिए केवल लेखक का नहीं, बल्कि परमेश्वर का भी यही आकलन था (1:8; 2:3)। ''खरा'' के लिए इब्रानी शब्द *tham* (*थाम*) का अर्थ ''पूरा,'' ''शिष्ट,'' ''निरापराध,'' या ''सच्चा'' है।[5] सप्तति अनुवाद में इस इब्रानी शब्द का अनुवाद *alēthinos* (*अलेथिनोस*) है जिसका अर्थ है ''ईमानदार।'' ''खराई'' का यह विचार आगे होने वाली बातचीत का मुख्य मुद्दा है। अय्यूब ने अपने कष्टों के बावजूद या अपने मित्रों के द्वारा लगाए जाने वाले आरोपों के बावजूद अपनी खराई को या निर्दोष होने को बरकरार रखा। इस शब्द का तात्पर्य यह नहीं है कि वह बिल्कुल पापरहित था। अय्यूब ने पापरहित होने का दावा नहीं किया (7:20, 21; 9:2, 15; 10:6; 14:16, 17)। परन्तु उसने यह मानने से इनकार किया कि उसके कष्टों की घोरता सीधे तौर पर उसके पापी होने के कारण थी।

''सीधा'' (*yashar, याशार*) एक विशेष शब्द है जिसका अर्थ कई बार संज्ञा रूप में हुआ है (''धर्मी जन''; भजन संहिता 11:2, 7)। इब्रानी शब्द का अनुवाद ''सरल,'' ''सहज,'' ''सही'' और ''उचित'' हो सकता है।[6] आम तौर पर यह शब्द ''सही,'' ''धार्मिक,'' ''धर्मी,'' ''ठीक,'' ''सच्चा,'' ''निर्मल'' और ''खरा'' जैसे नैतिक शब्दों के साथ मिलता है (व्यवस्थाविवरण 32:4; 2 इतिहास 31:20; अय्यूब 1:8; 2:3; 8:6)।

बाइबली विचार में, ''परमेश्वर का भय मानता'' (*y^{e}re' 'Elohim, येरे इलोहिम*)

आज्ञाकारी विश्वास का सार है। सुलैमान ने लिखा, ''यहोवा का भय मानना बुद्धि का मूल है'' (नीतिवचन 1:7)। यहां पर विचार परमेश्वर को दिया जाने वाला उचित सम्मान या आदर है। सभोपदेशक में प्रचारक ने इस उपदेश को यह कहते हुए समाप्त किया, ''सब कुछ सुना गया; अन्त की बात यह है कि परमेश्वर का भय मान और उसकी आज्ञाओं का पालन कर; क्योंकि मनुष्य का सम्पूर्ण कर्तव्य यही है'' (12:13)।

''बुराई से दूर रहता'' अय्यूब के इस शानदार विवरण को पूरा कर देता है। परमेश्वर की संगति में रहने वाले किसी व्यक्ति का कितना सुन्दर विवरण है यह!

आयत 2. अय्यूब के **सात बेटे और तीन बेटियां उत्पन्न हुईं**। बड़ा परिवार ईश्वरीय आशीष का संकेत था: ''जैसे वीर के हाथ में तीर, वैसे ही जवानी के लड़के होते हैं। क्या ही धन्य है वह पुरुष जिसने अपने तरकश को उनसे भर लिया हो! वह फाटक के पास शत्रुओं से बातें करते संकोच न करेगा'' (भजन संहिता 127:4, 5)। यहूदी लोगों के लिए ''सात'' और ''तीन'' अंकों का विशेष महत्व था। सात सिद्धता या पूर्णता को दर्शाता था; सात बेटे आदर्श अंक को दर्शाते थे (रूत 4:15)। तीन का अंक भी महत्वपूर्ण था क्योंकि इसे कई संदर्भों में इस्तेमाल किया जाता था (उत्पत्ति 6:10; 18:2; 40:10, 12, 13, 16; अय्यूब 2:11)। नये नियम के दृष्टिकोण से तीन मनुष्यजाति की सम्पूर्ण एकता (देह, प्राण और आत्मा; 1 थिस्सलुनीकियों 5:23) के साथ साथ पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा को दर्शाता है (मत्ती 28:19)। अय्यूब के कुल दस बच्चे थे, और यह भी एक आदर्श अंक था (1 शमूएल 1:8)।

आयत 3. अय्यूब के पास बहुत सम्पत्ति थी: **उसके सात हज़ार भेड़-बकरियां, तीन हज़ार ऊंट, पांच सौ जोड़ी बैल, और पांच सौ गदहियां, और बहुत से दास-दासियां थीं।** वह **वरन् उसके पास इतनी सम्पत्ति थी, कि पूर्वी देशों के लोगों में वह सबसे बड़ा था**। ''पूर्वी'' आम तौर पर पलिश्तीन के पूर्वी देश के लिए इस्तेमाल किया जाता है। यीशु के जन्म का स्वागत करने के लिए आए ज्योतिषी पूर्व से ही थे (मत्ती 2:1, 2)।

आयत 4. अय्यूब के पास न केवल बहुत सम्पत्ति थी बल्कि उसका बड़ा परिवार भी था जो मिल-जुलकर रहता था। **उसके बेटे** अक्सर दावतें करते रहते थे जिनमें वे अपनी **बहनों** को बुलाते रहते थे। यह एक ऐसी बात है जिसे कुछ टीकाकारों ने उस सामाजिक संदर्भ में असाधारण माना है।

आयत 5. अय्यूब की भक्ति इस तथ्य से साफ़-साफ़ दिखाई देती है कि वह अपने बच्चों को **पवित्र करता** और उनके लिए बलिदान **चढ़ाता था**। संदर्भ स्पष्टतया पुरखाओं के युग का है जहां परिवार में पिता आराधना में अगुआई करता था। **होमबलि** (*'oloth, ओलोथ*) वेदी पर आग से पूरी की पूरी भस्म हो जाती थी। ये बलियां आम तौर पर पाप के प्रायश्चित के लिए की जाती थीं (देखें लैव्यव्यवस्था 1:3, 4)।

क्योंकि अय्यूब सोचता था, ''कदाचित् मेरे लड़कों ने पाप करके परमेश्वर को छोड़ दिया हो।'' अय्यूब उन पर पाप करने का आरोप नहीं लगा रहा था बल्कि आराधना की अपनी गम्भीरता को मानते हुए चौकसी से काम कर रहा था। ''छोड़ दिया'' (*barak, बाराक*) शब्द वास्तव में ''आशीष'' शब्द है।[7] होमेर हेली ने लिखा है, ''अनुवाद हुए शब्द 'छोड़ दिया' (श्राप) का अनुवाद आम तौर पर कुशल मंगल पूछने या विदाई के समय की 'आशीष' के

रूप में किया जाता है और इस प्रकार वे परमेश्वर से अलग होते हुए उसे 'अलविदा' कह रहे हो सकते हैं।''[8] Barak (*बाराक*) का अर्थ कुछ अन्य मामलों में ''निंदा'' भी किया गया है (1 राजाओं 21:10, 13; अय्यूब 1:11; 2:5, 9; भजन संहिता 10:3)।

शैतान को अय्यूब को परखने की अनुमति दी गई (1:6-12)

[6]एक दिन यहोवा परमेश्वर के पुत्र उसके सामने उपस्थित हुए, और उनके बीच शैतान भी आया। [7]यहोवा ने शैतान से पूछा, ''तू कहाँ से आता है?'' शैतान ने यहोवा को उत्तर दिया, ''पृथ्वी पर इधर-उधर घूमते-फिरते और डोलते-डालते आया हूँ।'' [8]यहोवा ने शैतान से पूछा, ''क्या तू ने मेरे दास अय्यूब पर ध्यान दिया है? क्योंकि उसके तुल्य खरा और सीधा और मेरा भय माननेवाला और बुराई से दूर रहनेवाला मनुष्य और कोई नहीं है।'' [9]शैतान ने यहोवा को उत्तर दिया, ''क्या अय्यूब परमेश्वर का भय बिना लाभ के मानता है? [10]क्या तू ने उसकी, और उसके घर की, और जो कुछ उसका है उसके चारों ओर बाड़ा नहीं बांधा? तू ने तो उसके काम पर आशीष दी है, और उसकी सम्पत्ति देश भर में फैल गई है। [11]परन्तु अब अपना हाथ बढ़ाकर जो कुछ उसका है, उसे छू; तब वह तेरे मुँह पर तेरी निन्दा करेगा।'' [12]यहोवा ने शैतान से कहा, ''सुन, जो कुछ उसका है, वह सब तेरे हाथ में है; केवल उसके शरीर पर हाथ न लगाना।'' तब शैतान यहोवा के सामने से चला गया।

आयत 6. परमेश्वर के पुत्र कौन थे? जेम्स बर्टन कॉफमैन का कहना है कि '''परमेश्वर के पुत्र' का साधारण अर्थ केवल वे 'लोग जो परमेश्वर की आराधना करते हैं'''' है।[9] यह निःसंदेह सही है (रोमियों 8:14; इब्रानियों 12:7, 8)। उत्पत्ति 6:2, 4 में भी इसका यही अर्थ है। परन्तु अय्यूब 38:7 में संदर्भ स्वर्गीय जीवों के होने का संकेत देता है।[10] आयत 6 का संदर्भ भी यह मांग करता है कि इसे स्वर्गीय जीवों के सम्बन्ध में समझा जाए। यहां हमें परमेश्वर के व्यक्तिगत नाम का पहली बार नाम (*YHWH, यहवह*) ''याहवेह'' मिलता है, जिसके लिए इब्रानी लोग हमेशा पवित्र शास्त्र को पढ़ने में ''प्रभु'' (*'Adonay, अदोनाय*) का विकल्प देते थे। अंग्रेज़ी संस्करण NASB में प्रभु के लिए (LORD) लॉर्ड हर जगह बड़े अक्षरों में लिखा गया है। (12:7-10 पर टिप्पणियां देखें; 28:28 [n. 18]।)

उनके बीच शैतान भी आया। इब्रानी में ''शैतान'' है। कई टीकाकारों ने लिखा है कि यह शब्द व्यक्तिगत नाम तो नहीं था परन्तु एक शीर्षक था जिसका अनुवाद ''विरोधी'' होना चाहिए।[11] वह एक अलग व्यक्तित्व है जो मनुष्यों पर आरोप लगाता और उनका विरोध करता है। यहां पर उसे परमेश्वर की उपस्थिति में दिखाया गया है जो मानवीय निर्बलताओं को उघाड़ना चाहता है।

आयत 7. ''तू कहाँ से आता है?'' शैतान से परमेश्वर के प्रश्न का तात्पर्य यह नहीं है कि वह आरोप लगाने वाले की गतिविधियों से अनजान है। बल्कि इससे हमारे लिए यह समझने के लिए संदर्भ मिल जाता है कि मनुष्यों के बीच में आकर वह क्या करता है।

''पृथ्वी पर इधर-उधर घूमते-फिरते और डोलते-डालते आया हूँ।'' शैतान की गतिविधियां बिना किसी शक के ऐसे लोगों को तलाश करने की थी जो परमेश्वर को छोड़ देते

हैं। प्रेरित पतरस ने चेतावनी दी, ''सचेत हो, और जागते रहो, क्योंकि तुम्हारा विरोधी शैतान गर्जनेवाले सिंह के समान इस खोज में रहता है, कि किस को फाड़ खाए'' (1 पतरस 5:8)।

आयत 8. ''क्या तू ने मेरे दास अय्यूब पर ध्यान दिया है?'' इस प्रश्न का अनुवाद और अक्षरशः इस प्रकार से किया जा सकता है, ''क्या तू ने मेरे सेवक पर मन लगाया है?'' ''मेरे सेवक'' अय्यूब को (भजन संहिता 105:6, 42), याकूब (यशायाह 41:8), मूसा (निर्गमन 14:31), दाऊद (2 शमूएल 7:5, 8), और यशायाह (यशायाह 20:3) सहित परमेश्वर के पुराने नियम वाले बड़े आराधकों में कर देता है।

अय्यूब बिना किसी शक के सदाचार की मूर्त था! उसके लिए परमेश्वर का अपना आकलन था कि वह अपनी किस्म का अकेला व्यक्ति था। **''क्योंकि उसके तुल्य ... मनुष्य और कोई नहीं है।''** परमेश्वर ने यहां अय्यूब के वही चार गुण दोहराए जो आयत 1 में दिए गए हैं: **खरा और सीधा और मेरा भय माननेवाला और बुराई से दूर रहनेवाला।**

आयत 9. ''क्या अय्यूब परमेश्वर का भय बिना लाभ के मानता है?'' कहानी का आरम्भ यहीं से होता है। आरोप लगाने वाला यहां कह रहा था कि ''हर व्यक्ति की अपनी कीमत होती है!'' कोई भी परमेश्वर की सेवा यूं ही नहीं करता। उसने अय्यूब को एक खुदगर्ज आराधक के रूप में देखा, जो आराधना केवल उन आशिषों के कारण कर रहा था जो उसे मिली थीं। पुस्तक की विषयवस्तु इसी प्रश्न में बताई हुई है। यह मानवीय पीड़ा को समझाने के लिए नहीं लिखी गई, जो कि परखने वाला पत्थर है,[12] बल्कि बेपरवाह धर्म को ऊंचा उठाना है। क्या परमेश्वर जीवन की हर परिस्थिति में वह चाहे अच्छी हो बुरी, आराधना के योग्य है? उत्तर है हां।

आयत 10. फिर शैतान ने परमेश्वर से पूछा कि क्या उसने अय्यूब के इर्द-गिर्द **बाड़ा** नहीं लगा रखा। कांटों का ''बाड़ा'' आम तौर पर चोरों या जंगली जानवरों से बचाव के लिए दाख की बारियों के गिर्द लगाया जाता था (यशायाह 5:5; होशे 2:6)। शैतान ने कहा कि परमेश्वर ने अय्यूब को **चारों ओर** रक्षा और आशीष दी हुई है।

आयत 11. ''परन्तु अब अपना हाथ बढ़ाकर जो कुछ उसका है, उसे छू; तब वह तेरे मुँह पर तेरी निन्दा करेगा।'' ''परन्तु'' (*w^e'ulam, वेयुलाम*) मज़बूत विरोधसूचक शब्द है: ''परन्तु सचमुच, पर हर काम में।'' चुनौती दे दी गई थी। क्या परमेश्वर ने उसे स्वीकार करना था? क्या अय्यूब ने परमेश्वर की सेवा तब भी करनी थी यदि उसकी सम्पत्ति छीन ली जाती? क या उसने तब भी वफ़ादार रहना था जब उसे परखा जाता जैसे आग से परखा गया हो? ''निंदा'' वही शब्द है जिसका इस्तेमाल आयत 5 में हुआ है।

आयत 12. ''सुन, जो कुछ उसका है, वह सब तेरे हाथ में है; केवल उसके शरीर पर हाथ न लगाना।'' परमेश्वर ने अय्यूब के परखे जाने की अनुमति तो दी पर उस परखे जाने के ऊपर एक सीमा लगाई थी। मसीही होने के नाते हमें ऐसी ही प्रतिज्ञा दी गई है:

> तुम किसी ऐसी परीक्षा में नहीं पड़े, जो मनुष्य केसहने से बाहर है: और परमेश्वर सच्चा है: वह तुम्हें सामर्थ्य से बाहर परीक्षा में न पड़ने देगा, वरन् परीक्षा के साथ निकास भी करेगा कि तुम सह सको (1 कुरिन्थियों 10:13)।

अय्यूब पर दु:खों का घेरा (1:13-19)

[13]एक दिन अय्यूब के बेटे-बेटियां बड़े भाई के घर में खा रहे और दाखमधु पी रहे थे; [14]तब एक दूत अय्यूब के पास आकर कहने लगा, ''हम तो बैलों से हल जोत रहे थे, और गदहियां उनके पास चर रही थीं [15]कि शबा के लोग धावा करके उनको ले गए, और तलवार से तेरे सेवकों को मार डाला; और मैं ही अकेला बचकर तुझे समाचार देने को आया हूं।'' [16]वह अभी यह कह ही रहा था कि दूसरा भी आकर कहने लगा, ''परमेश्वर की आग आकाश से गिरी और उस से भेड़-बकरियां और सेवक जलकर भस्म हो गए; और मैं ही अकेला बचकर तुझे समाचार देने को आया हूं।'' [17]वह अभी यह कह ही रहा था, कि एक और भी आकर कहने लगा, ''कसदी लोग तीन दल बांधकर ऊंटों पर धावा करके उन्हें ले गए, और तलवार से तेरे सेवकों को मार डाला; और मैं ही अकेला बचकर तुझे समाचार देने को आया हूं।'' [18]वह अभी यह कह ही रहा था, कि एक और भी आकर कहने लगा, ''तेरे बेटे-बेटियाँ बड़े भाई के घर में खाते और दाखमधु पीते थे, [19]कि जंगल की ओर से बड़ी प्रचण्ड वायु चली, और घर के चारों कोनों को ऐसा झोंका मारा कि वह जवानों पर गिर पड़ा और वे मर गए; और मैं ही अकेला बचकर तुझे समाचार देने को आया हूं।''

आयतें 13-19. अय्यूब पर एक के बाद एक, चार बड़ी-बड़ी आफतें जल्दी-जल्दी से आन पड़ीं। दूत अय्यूब की जायदाद के खोने और उसके बच्चों की मृत्यु की भयानक खबरें एक के बाद एक लेकर आ रहा था (देखें 1:2, 3)। जॉन ई. हार्टले ने ध्यान दिलाया है कि विनाश के कारण बदल-बदल कर ''चारों दिशाओं से पृथ्वी और आकाश की शक्तियों के बीच से दक्षिण से शबा के लोग, पश्चिम के अंधड़ से बिजली, उत्तर से कसदियों, और पूर्व से जंगल की प्रचंड वायु''[13] का अंतिम विनाश सबसे खौफ़नाक था। माता-पिता के लिए एक बच्चे की मृत्यु से खराब बात क्या हो सकती है। होरेशियो स्पफोर्ड को ऐसी ही हानि उठानी पड़ी थी जब उसके चार बच्चे समुद्र में डूब गए थे। उसी अवसर पर उसने यह प्रिय भजन लिखा था ''इट इज़ वैल विद माई सोल।''[14]

दु:खों पर अय्यूब की प्रतिक्रिया (1:20-22)

[20]तब अय्यूब उठा, और बागा फाड़, सिर मुंड़ाकर भूमि पर गिरा और दण्डवत् करके कहा, [21]''मैं अपनी मां के पेट से नंगा निकला और वहीं नंगा लौट जाऊँगा; यहोवा ने दिया और यहोवा ही ने लिया; यहोवा का नाम धन्य है।'' [22]इन सब बातों में भी अय्यूब ने न तो पाप किया, और न परमेश्वर पर मूर्खता से दोष लगाया।

आयत 20. इस आयत में पांच क्रिया शब्द हैं जिन सब में कर्त्ता अय्यूब ही है। पहले तीन शब्द (**उठा, और बागा फाड़** और **सिर मुड़ाकर**) शोक करने के निकट पूर्वी रिवाजों को दर्शाते हैं (उत्पत्ति 37:34; एज्रा 9:3; यशायाह 15:2; यिर्मयाह 7:29; 16:6)। अंतिम दो क्रिया शब्द **(गिरा और दण्डवत् करके)** उपासना की मुद्रा को दर्शाते हैं।

आयतें 21, 22. ''मैं अपनी मां के पेट से नंगा निकला और वहीं नंगा लौट जाऊँगा।''

अय्यूब केवल इतना कह रहा था कि इस संसार में हम न कुछ लेकर आए हैं और न मरने पर यहां से कुछ लेकर जाएंगे। ''**यहोवा ने दिया और यहोवा ही ने लिया; यहोवा का नाम धन्य है।**'' अपनी हानि के इतना अधिक होने से चाहे अय्यूब स्तब्ध था पर उसके मुंह से पहली बात यही निकली थी, ''यहोवा ने दिया''! सोरेन कियरकेगार्ड ने सही कहा है:

> उस समय जब परमेश्वर ने सब कुछ ले लिया, उसने पहला शब्द यह नहीं कहा कि ''यहोवा ने ले लिया है'' बल्कि उसने पहला शब्द यह कहा कि ''यहोवा ने दिया।'' बात छोटी है पर छोटी होने में यह पूरी तरह से उसको व्यक्त कर देती है जो यह संकेत देना चाहती है। दु:ख के सामने खामोशी से अपने आपको सौंप देने में अय्यूब का प्राण पिस नहीं गया बल्कि उसका मन सबसे पहले धन्यवाद में खुला; कि हर चीज़ की हानि ने उससे सबसे पहले परमेश्वर का धन्यवाद करवाया कि वे सब आशिषें उसने दी थीं और अब उसने उससे ले ली हैं।[15]

कियरकेगार्ड बिल्कुल सही था। सबसे पहले यह मान लेने वाला व्यक्ति कि परमेश्वर देता है यह मानने के लिए तैयार है कि परमेश्वर लेता है। परमेश्वर के *देने* या उसके ले *लेने* को हम पूरी तरह से नहीं समझ पाएंगे। परन्तु जब परखे जाने का समय आता है तो हम अय्यूब के इस सुन्दर भाव को दिखाने की कोशिश कर सकते हैं: **इन सब बातों में भी अय्यूब ने न तो पाप किया, और न परमेश्वर पर मूर्खता से दोष लगाया।**

प्रासंगिकता

जीवन कठिन है पर हिम्मत रखें! (अध्याय 1)

एम. स्कॉट पेक ने अपनी बेस्ट सेलिंग पुस्तक *द रोल्ड रेस्ट ट्रेवलडे* का आरम्भ करने वाली इस शक्तिशाली घोषणा के साथ किया: ''जीवन कठिन है।''[16] अपने बढ़िया ढंग ने भाई एवन मिलोन अपने छात्रों से कहा करते थे ''जीवन परीक्षाओं और क्लेशों, मन की व्यथाओं और दिल टूटने, दबावों, खतरों और परेशानियों'' से भरा है। यूहन्ना 16:33 में हमारे प्रभु ने कहा, ''संसार में तुम्हें क्लेश होता है, *परन्तु* ढाढ़स बांधो, मैं ने संसार को जीत लिया है।''

हम पतित लोग हैं जो पतित संसार में रहते हैं जो पाप और बुराई और दुष्टता से भरा हुआ है, इस कारण हम पर विपत्तियां आएंगी; *परन्तु* हम हिम्मत से काम ले सकते हैं। परन्तु अय्यूब की पुस्तक में से पढ़ना और उन नियमों का अध्ययन करना हमें कई प्रकार से सहायता कर सकता है।

पहले, अय्यूब की पुस्तक हमें यह देखने में सहायता कर सकती है कि परमेश्वर आज भी परमेश्वर ही है। हमारे साथ चाहे जो भी हो और हमारा सामना चाहे किसी से भी क्यों न हो, यहोवा परमेश्वर आज भी परमेश्वर है! इस पुस्तक में ऐसा कुछ भी नहीं हुआ जो परमेश्वर की अनुमति के बिना हुआ हो या परमेश्वर उसके बीच खड़ा न हुआ हो। हमारे साथ चाहे जो भी हो जाए, परमेश्वर फिर भी परमेश्वर है। वह आज भी अपने सिंहासन पर विराजमान है, नियन्त्रण उसी के हाथ में है, वह आज भी हमारी ओर है (रोमियों 8:31) और आज भी वह चाहता है कि हम उसकी महिमा करें, और उसके वफ़ादार हों।

दूसरा, अय्यूब की पुस्तक हमें परमेश्वर के साथ गहरा सम्बन्ध रखने में सहायता कर सकती है। जब दु:ख देने वाली बातें हो रही हों, तो यह दिलचस्प नहीं लगता कि कुछ लोग परमेश्वर की ओर खिंचते हैं, जबकि दूसरे लोग परमेश्वर से दूर जा रहे होते हैं। अय्यूब परमेश्वर की ओर खिंचा था। उसने परमेश्वर से सवाल पूछे और अपना दर्द, क्रोध और निराशा व्यक्त की, इसमें कोई दिक्कत नहीं थी। परमेश्वर इससे निपट सकता था। अंत में अय्यूब को परमेश्वर की सामर्थ और महिमा में छोड़ दिया गया और वह एक भयंकर अनुभव में गुजरने से परमेश्वर के और करीब हो गया। रोमियों 5:3, 4 कहता है ''क्लेश से धीरज, और धीरज से खरा निकलना और खरे निकलने से आशा उत्पन्न होती है।''

तीसरा, अय्यूब की पुस्तक हमें परमेश्वर की महिमा करने और अपनी आशिषों को कभी मामूली न मानने में सहायता कर सकती है। अय्यूब को उसके पशु, उसके बच्चे, उसकी सम्पत्ति और उसका स्वास्थ्य किसने दिया था? परमेश्वर ने याकूब 1:17 कहता है, ''*हर एक* अच्छा और उत्तम दान ऊपर ही से है'' (NIV)। एक पत्नी और दस अनमोल बच्चे होना कितनी बड़ी आशीष है। अपने बच्चों के नजदीक रहना कितनी बड़ी आशीष है। ऐसे बच्चे होना जो मिल-जुल कर रहते हों कितनी बड़ी आशीष है। अपने परिवार की ओर से जब चाहे परमेश्वर के सिंहासन तक जा पाना कितनी बड़ी आशीष है। अय्यूब एक आशीषित व्यक्ति था, और हम भी आशीषित लोग हैं।

एक प्रसिद्ध गीत के ये बोल कितने अच्छे हैं: ''गिनो सारी बरकत, गिनो नाम बनाम और हैरान होगे तुम देखकर रब के काम।''[17] हमारे परमेश्वर ने हमारे लिए आकाश की खिड़कियां खोल दी हैं और हमारे ऊपर आशीष उण्डेल दी हैं। हमें उन आशिषों को कभी भी मामूली नहीं मानना चाहिए। हमें हमारे साथ इतनी भलाई करने के लिए प्रतिदिन उसका धन्यवाद करना चाहिए। आज जो हमारे पास है, हो सकता है कि कल न हो। इस कारण उन आशिषों के लिए जो हमें मिली हैं प्रतिदिन धन्यवाद देना और परमेश्वर को प्रतिदिन धन्य कहना बड़ा आवश्यक है। क्या आप उन नौ कोढ़ियों की तरह हैं जो शुद्ध तो हो गए थे परन्तु धन्यवाद करने के लिए लौटे नहीं थे या उस एक कोढ़ी की तरह हैं जो अपनी आशीष के लिए यीशु को धन्यवाद देने और उसकी महिमा करने के लिए वापस आया था? (देखें लूका 17:11-19.) अय्यूब ने परेशानियों के लिए परमेश्वर को दोष देने के बजाय, परमेश्वर की महिमा की और कहा, ''मैं अपनी मां के पेट से नंगा निकला और वहीं नंगा लौट जाऊँगा; यहोवा ने दिया और यहोवा ही ने लिया; यहोवा का नाम धन्य है'' (अय्यूब 1:21)।

चौथा, अय्यूब की पुस्तक हमें धीरज रखने और वफादार बने रहने में सहायक हो सकती है। धीरज रखना बाइबल का बड़ा विषय है। याकूब 5:11 कहता है, ''जैसा कि तुम जानते हो, हम उन्हें जो धीरज धरते हैं, धन्य मानते हैं। तुमने अय्यूब के धीरज के विषय में तो सुना ही है, और प्रभु की ओर से जो उसका प्रतिफल हुआ उसे भी जान लिया है, जिससे प्रभु की अत्यन्त करुणा और दया प्रगट होती है।'' मैंने भाइयों को अक्सर कहा है, ''मैं और अधिक धीरज रखना चाहता हूं पर मैंने कभी धीरज के लिए प्रार्थना नहीं की।'' कारण यह है कि सीखने के लिए मैं अय्यूब जैसे किसी अनुभव में से निकलना नहीं चाहता हूं। परन्तु धीरज आत्मा का एक फल (गलातियों 5:22) और मसीही गुण है (2 पतरस 1:6)। यीशु ने स्मुरने की कलीसिया से कहा

था, ''जो दु:ख तुझ को झेलने होंगे, उन से मत डर। प्राण देने तक विश्वासी रह, तो मैं तुझे जीवन का मुकुट दूंगा'' (प्रकाशितवाक्य 2:10; NIV)। एफ़. मिलस

ईमानदार मसीही (1:1–5)

अय्यूब ने अपने परिवार का आत्मिक अगुआ होने की जिम्मेदारी को गम्भीरता से लिया। वह अपने बच्चों के सामने धर्मी जीवन जीता, उन्हें अपना नमूना देता था (1:1, 2)। वह यह भी सुनिश्चित करता था कि अगर कहीं उन्होंने पाप किया हो तो उनकी ओर से बलिदान चढ़ाने के लिए उन्हें पवित्र किया जाए (1:5)।

मसीही पुरुषों को अपने परिवारों की अगुआई करने में यही गुण दिखाने चाहिए। पत्नियों को अपने पतियों के साथ पेश आने में मसीह के बलिदानी प्रेम का अनुसरण करने की आज्ञा है (इफिसियों 5:25–33) और उन्हें सिखाने के योग्य भी होना आवश्यक है (1 कुरिन्थियों 14:35)। पिताओं को अपने बच्चों का पालन पोषण करने, प्रभु का मार्ग सिखाने और अनुशासित करने को कहा गया है (इफिसियों 6:4; देखें 1 तीमुथियुस 3:4)। हर मसीही पति और पिता का यह लक्ष्य होना चाहिए कि वह अपने परिवार के लोगों को, मसीह के बलिदान के द्वारा उन्हें धर्मी बनाकर स्वर्ग में जाने में अगुआई करे।

अय्यूब के किरदार की नकल करना (1:1, 8)

अय्यूब की पुस्तक अय्यूब के जबर्दस्त किरदार के साथ आरम्भ होती है, ''वह खरा और सीधा था और परमेश्वर का भय मानता और बुराई से दूर रहता था'' (1:1)। परमेश्वर ने शैतान से बातचीत करते हुए अय्यूब की तारीफ़ में इसी भाषा का इस्तेमाल किया था (1:8)। आज मसीही लोगों को इन तीन ढंगों से अय्यूब के किरदार की नकल करनी चाहिए: (1) खराई की तलाश करके (''निर्दोष'' और ''ईमानदार'' होकर); (2) परमेश्वर का भय मानकर और (3) बुराई से दूर रहकर। डी. स्टिवर्ट

टिप्पणियां

[1]*COS* में, 1:98–104 में ''द एलक्विंट पेज़ंट,'' अनु. निलि शुपक। [2]*COS*, 1:485 में ''डायलॉग बिटवीन ए मैन ऐंड हिज़ गॉड,'' अनु. बेंजामिन आर. फोस्टर। [3]*COS*, 1:486–92 में ''द पोयम ऑफ़ द राइचियस सफरर,'' अनु. बेंजामिन आर. फोस्टर। [4]रॉबर्ट एल. आल्डन, अय्यूब, द न्यू अमेरिकन कॉमैंट्री (पृष्ठ नहीं: ब्रॉडमैन ऐंड होल्मन पब्लिशर्स, 1993), 46. [5]लुडविग कोहलर ऐंड वाल्टर बामगार्टनर, द *हिब्रू ऐंड अरेमिक लेक्सिकन ऑफ़ द ओल्ड टैस्टामैंट*, स्टडी एडिशन, अनु. व सम्पा. एम. ई. जे. रिचर्डसन (बोस्टन: ब्रिल, 2001), 2:1742–43. [6]वहीं, 1:450. [7]वहीं, 1:159. [8]होमेर हेली, *ए कॉमैंट्री ऑन* अय्यूब (पृष्ठ नहीं: रिलिजियस सप्लाई, Inc., 1994), 35. [9]जेम्स बर्टन ऐंड थेलमा बी. कॉफ़मैन, द *बुक ऑफ़* अय्यूब (अबिलेन, टेक्सस: एसीयू प्रैस, 1993), 14. [10]वहीं।

[11]हेली, 35; एच. एच. रोअले, अय्यूब, द सेंचुरी बाइबल, न्यू सीरीज़ (ग्रीनवुड, साउथ कैरोलाइना: द अटिक प्रैस, Inc., 1970), 32; और एल्बर्ट बार्नस, अय्यूब, नोट्स ऑन द ओल्ड टैस्टामैंट, सम्पा. रॉबर्ट फ्रू (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1949), 1:100. [12]कॉफ़मैन, 38. [13]जॉन ई. हार्टले, द *बुक ऑफ़* अय्यूब, द न्यू इंटरनेशनल कॉमैंट्री ऑन द ओल्ड टैस्टामैंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988),

77. [14]आल्डन, 61. [15] नहूम एन. ग्लेटज़र, द *डायमेंशंस ऑफ़ अय्यूब: ए स्टडी ऐंड सिलेक्टेड रीडिंग्स* (न्यू यॉर्क: शॉकन बुक्स, 1969), 260 में सोरेन कीर्केगार्ड, ''द लॉर्ड गेव, ऐंड द लॉर्ड हैथ टेकन अवे'' (1843)। [16]एम. स्कॉट पेक, द *रोड लेस ट्रैवल्ड: ए न्यू साइकोलॉजी ऑफ़ लव, ट्रेडिशनल वैल्यूस, ऐंड स्पिरिचुअल ग्रोथ* (न्यू यॉर्क: साइमन ऐंड शुस्टर, 1978), 15. [17]जॉनसन ओटमैन, ''व्हेन अपॉन लाइफ़'स बिल्लोस,'' *सॉँग्स ऑफ़ फ़ेथ ऐंड प्रेज़,* संक. व सम्पा. आल्टन एच. हावर्ड (वेस्ट मोनरो, लुइसियाना: हॉवर्ड पब्लिशिंग कं., 1994)।